सक्सेस मिरर

सफलता का कैप्सूल

वर्ष : 6
अंक : 63
अप्रैल : 2015

Visit us at : www.pdgroup.in

इस अंक में...

7 | दोष औरों को ना दें

8 | समसामयिकी घटना संग्रह

9 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

19 | आर्थिक घटना संग्रह

- राजस्थान सरकार एवं अदानी समूह में 10000 मेगावाट की सोलर पार्क परियोजना पर सहमति
- जीआईपीसी ने तीसरा वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय आईपी सूचकांक जारी किया
- रेल बजट 2015-16
- केन्द्रीय बजट 2015-16
- आर्थिक समीक्षा 2014-15

26 | राष्ट्रीय घटना संग्रह

- आंध्र प्रदेश सरकार ने सौर और पवन ऊर्जा नीति में सुधार को मंजूरी दी
- 14 डोर्नियर–228 विमानों की आपूर्ति को एचएएल और भारतीय वायु सेना में ₹ 1090 करोड़ का अनुबंध
- बिहार सरकार का एससी, एसटी और छात्राओं को स्नातकोत्तर तक निःशुल्क शिक्षा का फैसला

29 | अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

- भारत–रूस–चीन के विदेश मंत्रियों की 13वीं बैठक बीजिंग में सम्पन्न
- ब्रिटेन की प्रतिनिधि सभा ने तीन लोगों के डीएनए से बच्चे के जन्म को दी मंजूरी

32 | खेल खिलाड़ी

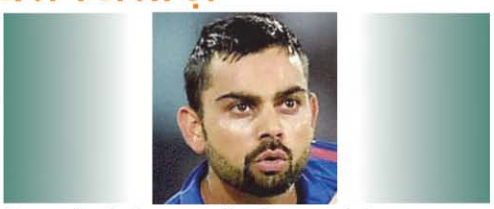

- विराट कोहली विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ शतक बनाने वाले पहले भारतीय क्रिकेटर बने

35 | महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

लेख

38 | संवैधानिक लेख : अध्यादेशों पर राष्ट्रपति की चिंता

120 | वार्षिक रिपोर्ट 2013-14–कॉरपोरेट क्षेत्र में अनुसंधान विकास, जागरूकता कार्यक्रमों एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के बढ़ते चरण–विहंगावलोकन

122 | प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता

124 | तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-60 का परिणाम

125 | रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

39 आर.आर.सी. (गोरखपुर) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

45 आर.आर.सी. (सिकन्दराबाद) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

86 डाक विभाग : दिल्ली पोस्टमैन/मेलगार्ड परीक्षा, 2014

एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी स्तरीय (10+2) प्रथम पाली परीक्षा, 2014

91 सामान्य बुद्धिमत्ता

95 English Language

97 संख्यात्मक अभिरुचि

103 सामान्य जानकारी

106 इन्टैलीजेंस ब्यूरो सुरक्षा सहायक (कार्यपालिक) परीक्षा, 2014

111 बिहार कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित इण्टरस्तरीय (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

- सम्पादक : महेन्द्र जैन
- रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11-ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा–2
- सम्पादकीय ऑफिस
  1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने
  आगरा–मथुरा बाईपास, आगरा–282 005
  फोन– 4053333, 2531101, 2530966
  फैक्स– (0562) 4053330, 4031570
  ई-मेलः सम्पादकीयः publisher@pdgroup.in
  कस्टोमर केयरः care@pdgroup.in
- दिल्ली ऑफिस
  4845, अंसारी रोड, दरियागंज,
  नई दिल्ली–110 002
  फोन– 011-23251844/66
- हैदराबाद ऑफिस
  1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स
  बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद–500 044
  फोन– 040-66753330
  मो– 09391487283
- पटना ऑफिस
  पीरमोहनी चौक, कदमकुआँ
  पटना–800 003
  फोन–0612-2673340
  मो–09334137572
- कोलकाता ऑफिस
  28, चौधरी लेन, श्याम बाजार
  कोलकाता– 700 004
  फोन– 033-25551510
  मो– 07439359515
- लखनऊ ऑफिस
  B-33, ब्लंट स्क्वायर, कानपुर
  टैक्सी स्टैण्ड लेन, मवइंया,
  लखनऊ– 226 004
  फोन– 0522-4109080
  मो– 09760181118

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी **'सक्सेस मिरर'** की नहीं है.

"किसी की आँख में कूड़ा देखने से पहले अपनी आँख का कूड़ा देखिए. दूसरे शब्दों में यदि आप किसी में कमी निकाल रहे है, तो पहले अपने आप में कमी निकालिए." —प्रभु ईसा मसीह

दोष औरों को ना दें

प्रत्येक जीव के जीवन में अनेक-अनेक बाधाएं, परेशानियाँ, कठिनाइयाँ प्रायः आती ही रहती हैं. जब-जब व्यक्ति की जिन्दगी में अन्तराएं उपस्थित होती हैं. व्यक्ति कुछ पाना चाहता है. मार्ग में अवरोधक पैदा हो जाते हैं, वह कुछ करना चाहता है, लोग उसे मना कर देते हैं, रोक देते हैं. उसको समुचित अवसर नहीं देते हैं. तब-तब ऐसे लोग क्या सोचते हैं ? जब कभी हमारी इच्छित वस्तु की अवस्था की प्राप्ति में अन्तराय आती हैं. प्रायः हम यही कहते हैं कि दूसरे लोग ऐसा करने नहीं दे रहे. दूसरे लोग मुझे जीने नहीं दे रहे, दूसरे लोग मुझे परेशान कर रहे हैं, ये लोग मेरी खुशियाँ नहीं चाहते हैं. इन्होंने ही जानबूझ करके मेरे काम में टाँग अड़ाई, किन्तु क्या कभी ऐसे समय में हमने आत्मावलोकन किया कि हमारे साथ यदि ऐसा होता है कि दूसरे लोग बाधक बनते हैं, तो अवश्य ही हम भी कभी औरों की जिन्दगी में बाधक बने होंगे. अगर हमारे साथ ऐसा होता है कि लोग मित्र बनकर आते हैं और पीछे से घात कर देते हैं, हमें नुकसान पहुँचाते हैं, हमारे साथ दगाबाजी करते हैं ऐसे में हम औरों को दोष तो आसानी से दे देते हैं, किन्तु क्या ऐसे समय में हम अपने अतीत में झाँकते हैं कि अवश्य हमने भी कभी दगाबाजी की है. दगाबाजी करने का विचार किया है, संकल्प किया है. हमने भी कभी किसी के मार्ग में, खुशियों में अन्तराय पैदा की हैं. सम्भव है हम भी औरों की खुशियों में खुश नहीं हो पाए, हम भी औरों के सुखों को देखकर ईष्यालु बने. हमने भी किसी भाँति औरों के सुखों को छीनने का, उनसे अपने आपको ज्यादा साबित करने का प्रयास किया है. अगर हमने अतीत में ऐसे कोई कार्य, उपक्रम न किए होते, तो आज हमारे साथ ऐसा क्यों होता ? और अगर हमने अतीत में कुछ गलतियाँ की हैं, तो क्यों न हम अपनी ही गलतियों को शुद्ध करें. बजाय दूसरों को दोष देने के, जब तक हम दूसरों को दोष देते रहेंगे तब तक हमारी कभी भी किसी भी समस्या का हल नहीं निकलेगा, बल्कि वर्तमान की समस्या के साथ-साथ भविष्य के लिए समस्या के हम फिर से नए बीज तैयार कर रहे हैं. भविष्य में फिर से समस्यारूपी फसल हमारे सामने आएगी, क्योंकि इन समस्याओं के दौरान हमने औरों को दोषारोपित किया और जब औरों को कलंकित किया, औरों को इसका बुराइयों का, कमियों का श्रेय दिया, तो क्या होगा. क्या उनकी आत्मा, उनकी चेतना हमारे प्रति द्वेष से नहीं भरेगी और जब उनकी चेतना द्वेष से भरेगी, तो वे पुनः हमारे लिए बाधक बनते चले जाएंगे. अतः हे देवानुप्रिय, हम सब अपने जीवन से दूसरों को दोष देना बंद करें. हम ये अच्छी तरह से अपने ज़हन में, अपनी अन्तरआत्मा में इस सूत्र को, इस

> *"When you blame and criticise others, you are avoiding some truth about yourself."*
>
> **—Deepak Chopra**

तथ्य को स्थापित करें जिसे आत्मज्ञानी पूज्य विराट गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि "निमित्त सदा निर्दोष होता है. निमित्त का कोई दोष नहीं होता. ये जो लोग हमारी ज़िन्दगी की फिल्म में खलनायक के रूप में उपस्थित हो रहे हैं, ये सब 'निमित्त' हैं, ये निर्दोष हैं. दोष इनका नहीं, दोष हमारे स्वयं के अतीत के विचारों का, अतीत के गलत विश्वासों का है. और हो सकता है वर्तमान में वो गलत विश्वास कायम रहे हो, तो आज से ही हम अपने भीतर के गलत विश्वासों को, विचारों को, विकारों को अपने आपमें से निकाल फेंकें. दूर कर दें." अपने मन को शिकवा-शिकायतों से रहित करने के लिए भी हमें अभ्यास की जरूरत है. यह अभ्यास कई तरह से हो सकता है. जिस प्रकार एक वैद्य या चिकित्सक रोगी मरीज़ को औषधि देने के साथ यह भी परामर्श देता है कि इसे तीन, पाँच या सात दिन तक लगातार बीमारी की मात्रा के अनुसार दिन में एक-दो या तीन बार लेना होगा, तब ही रोग मुक्ति सम्भव है. इसी प्रकार मानसिक मिथ्या धारणाओं से निज़ात पाने के लिए भी हमें इस सूत्र को बार-बार अपने आपको निर्देशित करते हुए कहना होगा कि—

निमित्त सदा निर्दोष है

"The other one is always innocent."